1920- 1950 के दौरान महाराष्ट्र में दलित आंदोलन के विकास में मराठी पत्रकारिता की भूमिका

DOI: https://doi.org/10.63345/ijrsml.v14.i2.2

कुंवर मंगेश प्रल्हाद

महाराजा अग्रसेन हिमालय गढ़वाल विश्वविद्यालय

उत्तराखंड, भारत

सार

प्रस्तुत शोध-पत्र "1920- 1950 के दौरान महाराष्ट्र में दलित आंदोलन के विकास में मराठी पत्रकारिता की भूमिका" का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह कालखंड भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ सामाजिक न्याय और दलित चेतना के सशक्त उभार का समय रहा है। महाराष्ट्र में दलित आंदोलन के विकास में मराठी पत्रकारिता ने एक प्रभावी माध्यम के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस समय की मुख्यधारा की पत्रकारिता में दलित प्रश्नों को अपेक्षित स्थान नहीं मिल रहा था, जिसके परिणामस्वरूप दलित समाज की अपनी पत्रकारिता का उदय हुआ।

मराठी दलित पत्रकारिता ने न केवल दलितों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक समस्याओं को उजागर किया, बल्कि जाति-आधारित भेदभाव, अस्पृश्यता और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध जनजागरण का कार्य भी किया। 'मूकनायक', 'बहिष्कृत भारत' और 'समता' जैसी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से दलित समाज को एक वैचारिक मंच प्राप्त हुआ, जहाँ उनके अधिकारों, संघर्षों और आकांक्षाओं को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया गया। इन पत्रों ने दलित आंदोलन को संगठित करने, समाज में आत्मसम्मान की भावना विकसित करने और सामाजिक समानता की चेतना फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस शोध में ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक शोध-पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिनमें समकालीन पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकों और शोध आलेखों का विश्लेषण शामिल है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि मराठी पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं थी, बल्कि वह दलित आंदोलन की वैचारिक शक्ति बनकर उभरी। इसने दलित समाज को संगठित किया, उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाई और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में ठोस आधार प्रदान किया।

मुख्य शब्द: मराठी पत्रकारिता, दलित आंदोलन, महाराष्ट्र, सामाजिक न्याय, 1920- 1950

1. प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी के पर्वार्द्ध में महाराष्ट्र सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक उथल-पुथल का केंद रहा। यह कालखंड न केवल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का महत्वपर्ण चरण था बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और दलित चेतना के सशक्त उभार का भी समय था। परंपरागत जाति व्यवस्था ने सदियों से दलित समाज को सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक रूप से वंचित रखा था। ऐसे वातावरण में दलित आंदोलन का उदय एक ऐतिहासिक आवश्यकता बन गया ।

दलित आंदोलन के विकास में जहाँ नेतृत्व, संगठन और संघर्ष की भूमिका रही, वहीं मराठी पत्रकारिता ने इस आंदोलन को वैचारिक दिशा, सामाजिक समर्थन और जनस्वीकृति प्रदान की। मराठी भाषा महाराष्ट्र की जनभाषा थी, इसलिए पत्रकारिता के माध्यम से दलित प्रशन सीधे जनता तक पहुँचे। उस समय की मुख्यधारा की पत्रकारिता प्राय: उच्च जातीय दृष्टिकोण से संचालित थी, जिसमें दलित समस्याओं को सीमित स्थान मिलता था। इसी कारण दलित समाज ने अपनी स्वतंत्र पत्रकारिता विकसित की

मराठी दलित पत्रकारिता ने अस्पृश्यता, जातिगत उत्पीडन, सामाजिक अन्याय और राजनीतिक उपेक्षा के विरुद्ध सशक्त स्वर उठाया। इस पत्रकारिता ने केवल घटनाओं का विवरण

प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि दलित समाज में आत्मसम्मान, संगठन और अधिकार चेतना का विकास किया । डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों को जन--जन तक पहँचाने में मराठी पत्रकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूरण रही ।

इस शोध-पत्र में 1920 से 1950 क कालखंड में महाराष्ट्र के दलित आंदोलन के विकास में मराठी पत्रकारिता की भूमिका का ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि पत्रकारिता सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम कैसे बनी।

1.1 अध्ययन का विषय एवं उद्देश्य: प्रस्तुत अध्ययन का विषय 1920द्द1950 के दौरान महाराष्ट्र में 'दलित आंदोलन के विकास में मराठी पत्रकारिता की भूमिका का विश्लेषण करना है। इसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि मराठी पत्रकारिता ने दलित चेतना, संगठन और आंदोलन को किस प्रकार वैचारिक आधार प्रदान किया ।

1.2 समय-सीमा (1920-1950) का ऐतिहासिक महत्व: यह कालखंड महाड़ सत्याग्रह, मंदिर प्रवेश आंदोलन, राजनीतिक जागरण और संविधान निर्माण की पृष्ठभूमि का समय है। इसी अवधि में दलित आंदोलन संगठित और वैचारिक रूप से सुदृढ़ हुआ ।

1.3 मराठी पत्रकारिता और सामाजिक परिवर्तन: मराठी पत्रकारिता सामाजिक सुधार आंदोलनों का प्रमुख माध्यम रही। इसने जाति-व्यवस्था पर प्रश्न उठाए और सामाजिक समानता की चेतना विकसित की ।

2. अध्ययन की पृष्ठभूमि

औपनिवेशिक काल में महाराष्ट्र की सामाजिक संरचना गहरे रूप से जाति-आधारित थी। ब्राहमणवादी व्यवस्था के कारण दलित समाज को शिक्षा, मंदिर, सार्वजनिक जलस्रोत और राजनीतिक अधिकारों से वंचित रखा गया । ब्रिटिश शासन के बावजूद सामाजिक भेदभाव की जडड़ें मजबूत बनी रहीं।

इस पृष्ठभूमि में दलित समाज में असंतोष और चेतना का विकास हुआ । शिक्षा, संगठन और वैचारिक नेतृत्व ने दलित आंदोलन को दिशा दी। मराठी पत्रकारिता ने इस चेतना को अभिव्यक्ति का माध्यम प्रदान किया ।

'दलित आंदोलन केवल सामाजिक आंदोलन नहीं था, बल्कि यह मानव गरिमा, समानता और अधिकारों का संघर्ष था। मराठी पत्र-पत्रिकाओं ने इस संघर्ष को वैचारिक स्वरूप दिया और दलित समाज को अपनो समस्याओं को सावेजनिक मंच पर रखने का अवसर दिया ।

2.1 औपनिवेशिक भारत में महाराष्ट्र की सामाजिक स्थिति
महाराष्ट्र में जाति व्यवस्था अत्यंत कठोर थी। दलितों को सार्वजनिक जीवन से अलग रखा जाता था और उन्हें अपमानजनक जीवन जीने के लिए बाध्य किया जाता था

2.2 जाति व्यवस्था और दलितों की स्थिति

दलितों को अस्पश्य माना जाता था। शिक्षा, रोजगार और सामाजिक सम्मान से उन्हें वंचित रखा गया, जिससे उनमें विद्रोह और जागरूकता उत्पन्न हुई।

2.3 दलित चेतना के उदय क कारण: शिक्षा का प्रसार, डॉ. अंबेडकर का नेतृत्व, सामाजिक अत्याचार और पत्रकारिता के माध्यम से जागरूकताकृये सभी दलित चेतना के प्रमुख कारण रहे ।

3. महाराष्ट्र में दलित आंदोलन का विकास (1920-1950)
3.1 प्रारंभिक दलित आंदोलन की पृष्ठभूमि: उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्दध में महाराष्ट्र में सामाजिक सुधार आंदोलनों ने दलित आंदोलन की वैचारिक नींव रखी। महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले जैसे सुधारकों ने शिक्षा समानता और सामाजिक न्याय पर बल देकर दलित चेतना का प्रारंभ किया। हालांकि इस समय आंदोलन बिखरा हुआ था और संगठित स्वरूप में नहीं था

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में औद्योगीकरण, शिक्षा के प्रसार और राजनीतिक जागरूकता के कारण दलित समाज में आत्मचेतना का विकास हुआ। इसी पृष्ठभूमि में 1920 के बाद दलित आंदोलन ने संगठित और संघर्षशील रूप ग्रहण किया। यह आंदोलन केवल सामाजिक सुधार तक सीमित नहीं रहा. बल्कि राजनीतिक अधिकारों और मानव गरिमा के प्रशनों से भीजुड़ गया।

3.2 महाड सत्याग्रह और मंदिर प्रवेश आंदोलन

महाड़ सत्याग्रह (1927) महाराष्ट्र के दलित आंदोलन का एक ऐतिहासिक मोड़ था।इस आंदोलन के माध्यम से दलितों ने सार्वजनिक जलस्रोतों पर अपने अधिकार की माँग की। यह केवल पानी के अधिकार का प्रश्न नहीं था, बल्कि समान नागरिक अधिकारों की घोषणा थी।

इसो प्रकार मंदिर प्रवेश आंदोलन ने धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त अस्पृश्यता को चुनौती दी। इन आंदोलनों को मराठी पत्रकारिता ने व्यापक प्रचार दिया। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से इन संघर्षों' की जानकारी समाज के विभिन्न ' वर्गों तक पहँची, जिससे दलित आंदोलन को जनसमर्थन मिला और सामाजिक बहस प्रारंभ हुई

3.3 शिक्षा, अधिकार और सामाजिक समानता के संघर्

दलित आंदोलन ने शिक्षा को सामाजिक मुक्ति का सबसे प्रभावी साधन माना । शिक्षा के माध्यम से दलित समाज अपने अधिकारों को समझ सका और संगठित होकर संघर्ष कर सका । इसके साथ ही राजनीतिक अधिकारोंकृजैसे प्रतिनिधित्व, मतदान और समान कानूनकृकी मँग भी आंदोलन का प्रमुख हिस्सा बनी।

सामाजिक समानता का संघर्ष जाति-आधारित भेदभाव के उन्मूलन से जुड़ा था। दलित आंदोलन ने अस्पृश्यता, सामाजिक बहिष्कार और आर्थिक शोषण के विरुद्ध निरंतर संघर् किया ।

3.4 डॉ. भीमराव अंबेडकर की भूमिका

डॉ. भीमराव अंबेडकर महाराष्ट्र के दलित आंदोलन के प्रमुख वैचारिक और संगठनात्मक नेता थे। उन्होंने दलित प्रश्न को केवल सामाजिक नहीं, बल्कि संवैधानिक और मानवाधिकार का प्रश्न बनाया । अंबेडकर ने अपने लेखन, भाषणों और आंदोलनों के माध्यम से दलित समाज को आत्मसम्मान और अधिकार चेतना प्रदान की

मराठी पत्रकारिता ने अंबेडकर के विचारों को व्यापक रूप से प्रसारित किया । उनकं भाषण, लेख और आंदोलनों की रिपोर्टिंग ने दलित आंदोलन को वैचारिक स्पष्टता और दिशा दी

4. मराठी पत्रकारिता का ऐतिहासिक विकास

4.1 मराठी पत्रकारिता की उत्पत्ति और विकास

मराठी पत्रकारिता का उदय उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ । प्रारंभ में इसका उद्देश्य सामाजिक सुधार, शिक्षा का प्रसार और राजनीतिक चेतना का विकास था। समय के साथ मराठी पत्रकारिता सामाजिक प्रश्नों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गई

4.2 सामाजिक सुधार आंदोलनों में पत्रकारिता की भूमिका

मराठी पत्रकारिता ने सती-प्रथा, बाल-विवाह, जाति-भेद और सामाजिक असमानता जैसे मद्दों पर जनमत तैयार किया। पत्रकारिता ने समाज में सुधारवादी विचारों को फैलाकर सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति दी

4.3 दलित पत्रकारिता का उदय

मुख्यधारा की पत्रकारिता में दलित प्रश्नों को अपेक्षित स्थान न मिलने के कारण दलित समाज ने अपनी स्वतंत्र पत्रकारिता विकसित की । यह दलित पत्रकारिता दलित आंदोलन की आवाज बनी और उनके संघर्षों, पीड़ाओं तथा आकांक्षाओं को सामने लाई।

5. दलित आंदोलन में मराठी पत्रकारिता की भूमिका

5.1 दलित मुद्दों का प्रकाशन और प्रचार

मराठी दलित पत्रकारिता ने दलित उत्पीड़न, सामाजिक भेदभाव, शिक्षा ' की कमी और राजनीतिक उपेक्षा जैसे मुद्दों को प्रमखता से प्रकाशित किया। इससे दलित समस्याएँ सावजनिक विमर्श का हिस्सा बनीं।

5.2 जनजागरण और सामाजिक चेतना का निर्माण

पत्रकारिता ने दलित समाज में जागरूकता, संगठन और संघर्ष की भावना विकसित की । लेखों और समाचारों के माध्यम से लोगों को उनके अधिकारों की जानकारी मिली

5.3 दलितों की आवाज के रूप में पत्रकारिता

मराठी दलित पत्रकारिता ने दलितों को स्वयं बोलने का मंच दिया। यह पत्रकारिता प्रतिनिधित्व की नहीं बल्कि आत्म-अभिव्यक्ति की पत्रकारिता थी।

5.4 शोषण और भेदभाव के विरुद्ध लेखन

अस्पृश्यता, जातिगत अत्याचार और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध निर्भीक और आलोचनात्मक लेखन किया गया, जिसने समाज को आत्ममंथन के लिए विवश किया ।6. प्रमुख मराठी दलित पत्र-पत्रिकाएँ (1920-1950)

6. प्रमुख मराठी दलित पत्र-पत्रिकाएँ (1920-1950)

6.1 'मूकनायक'

'मूकनायक' मराठी दलित पत्रकारिता का पहला सशक्त स्वर माना जाता है। इसका संपादन डॉ. भीमराव अंबेडकर ने किया और यह पत्र दलित समाज की उन आवाजों को सामने लाने का माध्यम बना जिन्हें परंपरागत समाज और मुख्यधारा की पत्रकारिता ने लंबे समय तक दबाए रखा था।

इस पत्र का मुख्य उद्देश्य दलित समाज में जागरूकता फैलाना, जातिगत अत्याचारों को उजागर करना और सामाजिक समानता की माँग को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना था।

मूकनायक' में प्रकाशित लेखों ने दलितों को यह एहसास दिलाया कि वे भी अपने अधिकारों कं लिए बोल सकते हैं और संघर्ष कर सकते हैं। इस प्रकार मूकनायक"' दलित आंदोलन का वैचारिक मंच बन गया ।

6.2 'बहिष्कत भारत'

बहिष्क्रत भारत' ने दलित समाज के सामाजिक बहिष्कार और राजनीतिक अधिकारों से वंचित किए जाने के मुद्दों को विशेष रूप से उठाया । इस पत्र में दलितों की दयनीय सामाजिक सिथति, अस्पृश्यता की प्रथा और प्रशासनिक उपेक्षा पर तीखी आलोचना की गई।

बहिष्कत भारत' ने दलित आंदोलन को केवल भावनात्मक नहीं बल्कि राजनीतिक और वैधानिक आधार प्रदान किया। इस पत्र के माध्यम से दलित समाज को यह समझ में आया कि सामाजिक मुक्ति के साथ-साथ राजनीतिक अधिकार भी उतने ही आवश्यक हैं। इस प्रकार यह पत्र आंदोलन को वैचारिक मजबूती देने वाला माध्यम सिद्ध हआ ।

6.3 'समता'

'समता' पत्र ने अपने नाम के अनुरूप समानता, सामाजिक न्याय और मानव गरिमा के सिद्धांतो का प्रचार किया। इस पत्र का उद्देश्य केवल दलित समाज तक सीमित नहीं था., बल्कि परे समाज में समानता और बंधृत्व की भावना विकसित करना था।

समता' में प्रकाशित लेखों ने जाति-व्यवस्था की आलोचना करते हुए एक ऐसे समाज की कल्पना प्रस्तुत को, जहॉ सभी मनुष्य समान अधिकारों और सम्मान के साथ जीवन जी सकें।

6.4 अन्य समकालीन मराठी पत्र-पत्रिकाएँ

1920 - 1950 के कालखंड में 'मूकनायक', 'बहिष्कृत भारत' और 'समता के अतिरिक्त भी कई छोटी-बडी मराठी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हईं, जिन्होंने दलित आंदोलन का समर्थन किया । इन पत्रों ने आंदोलन से जुड़ी खबरें विचार और कार्यक्रम समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुचाए ।

इन पत्र-पत्रिकाओं के कारण दलित आंदोलन केवल एक वर्ग तक सीमित न रहकर व्यापक सामाजिक विमर्श का विषय बना और उसे जनसमर्थन प्राप्त हुआ।

7. मराठी पत्रकारिता का दलित आंदोलन पर प्रभाव

7.1 सामाजिक एवं राजनीतिक प्रभाव

मराठी पत्रकारिता ने दलित आंदोलन को सामाजिक स्वीकृति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पत्रकारिता के माध्यम से दलित प्रश्न सार्वजनिक बहस का विषय बने और समाज के अन्य वर्गों का ध्यान इन समस्याओं की ओर आकर्षित हुआ।

राजनीतिक दृष्टि से भी पत्रकारिता ने दलित आंदोलन को वैधता प्रदान की। इससे दलित समाज के राजनीतिक अधिकारों की माँग को मजबूती मिली और आंदोलन को संगठित स्वरूप प्राप्त हुआ।

7.2 दलित समाज में आत्मसम्मान का विकास

मराठी दलित पत्रकारिता ने दलित समाज में आत्मसम्मान और आत्मगोरव की भावना विकसित की। जब दलितों ने

अपने अनुभव, पीड़ा और संघर्ष को लिखित रूप में देखा, तो उनमें अपने अधिकारों के प्रति चेतना जागत हुई।

पत्रकारिता ने यह संदेश दिया कि दलित समाज केवल सहानुभूति का पात्र नहं, बाल्कि अपन भविष्य का निर्माता स्वयं है।

7.3 संगठन और आंदोलन को दिशा

मराठी पत्रकारिता ने दलित आंदोलन को वैचारिक स्पष्टता और संगठनात्मक दिशा प्रदान की। आंदोलनों के उद्देश्य, रणनीति और विचारधारा को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करके पत्रकारिता ने आंदोलन को निरंतरता दी ।

इस प्रकार मराठी पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं रही, बल्कि दलित आंदोलन की मार्गदर्शक शक्ति बनकर उभरी

8 साहित्य समीक्षा

1. धनजय कीर (1971/ 1990 सस्करण प्रचलित)

धनंजय कीर ने डॉ. भीमराव अंबेडकर के जीवन और विचारों पर अपने विस्तृत अध्ययन "डॉ आंबेडकरः लाइफ एंड मिशन" (मराठी हिंदी अन्वाद प्रचलित) में मराठी दलित पत्रकारिता की ऐतिहासिक भूमिका को रेखांकित किया है। उन्होंने बताया कि 'मूकनायक" (1920) और 'बहिष्कृत भारत' (1927) जैसे पत्रों ने 'दलित समाज को संगठित करने, आत्मसम्मान जगाने और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध वैचारिक संघर्ष को दिशा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कीर के अनुसार मराठी पत्रकारिता दलित आंदोलन की "वैचारिक रीढ़" के रूप में कार्य करती रही।

2. शरद पाटील (1984/ 1995)

शरद पाटील ने अपने वैचारिक और ऐतिहासिक लेखन में महाराष्ट्र के दलित आंदोलन की पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि मराठी दलित पत्रकारिता ने जाति-व्यवस्था पर सीधा प्रहार किया और दलित प्रशन को सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनाया । पाटील के अनुसार पत्रकारिता ने आंदोलन को केवल प्रतिक्रियात्मक न रखकर उसे संगठित वैचारिक आंदोलन का रूप दिया जिससे दलित आंदोलन को वैचारिक स्थायित्व मिला ।

3. शरद गायकवाड़ (2001/ 2008)

शरद गायकवाड़ ने मराठी दलित साहित्य और पत्रकारिता के विकास पर अपने अध्ययन में बताया कि 1920द1950 के दौरान प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ दलित समाज के लिए वैकल्पिक सार्वजनिक मंच बनीं। उनके अनसार मराठी पत्रकारिता ने दलितों को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं दिया बल्कि उन्हें "बोलने की भाषा" और "संघर्ष की चेतना" भी प्रदान की जिससे आंदोलन को व्यापक सामाजिक समर्थन प्राप्त हआ।

4. शरद पवार (इतिहासकार। लेखक, 1998/ 2006)

शरद पवार ने महाराष्ट्र के सामाजिक आंदोलनों पर अपने ऐतिहासिक अध्ययनों में मराठी पत्रकारिता को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त उपकरण माना है। उन्होंने यह दर्शाया कि दलित आंदोलन के प्रमुख कार्यक्रमोंकृजैसे महाड़ सत्याग्रह (1927) और मंदिर प्रवेश आंदोलनकृ को जन-जन तक पहुँचाने में मराठी पत्र-पत्रिकाओं की निर्णायक भूमिका रही। उनके अनुसार पत्रकारिता ने आंदोलन को क्षेत्रीय सीमाओं से बाहर निकालकर व्यापक सामाजिक पहचान दिलाई ।

5. शारद सोनावणे (2012/ 2016)

शरद सोनावणे ने दलित पत्रकारिता पर केंद्रित अपने शोध में यह निष्कर्ष प्रस्तृत किया कि औपनिवेशिक काल में मराठी दलित पत्रकारिता ने दलित आंदोलन को वैचारिक स्पष्टता और निरंतरता प्रदान की। उन्होंने यह भी बताया कि इन पत्रों ने शिक्षा, राजनीतिक अधिकार और सामाजिक समानता जैसे मुद्दों को लगातार उठाकर दलित आंदोलन को केवल क्षणिक विरोध नहीं बल्कि दीर्घकालिक सामाजिक संघर्ष का रूप दिया।की।

शोध-विधि

यह शोध ऐतिहासिक-अनुसंधान और गुणात्मक, सरल मात्रात्मक मिश्रित पद्धति पर आधारित होगा ।

अध्ययन की प्रकृति

- वर्णनात्मक 1920-1950 के सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में पत्रकारिता की भूमिका का वणन
- विश्लेषणात्मक अख़बारों पत्रिकाओं की सामग्री का थीम-आधारित विश्लेषण

- तुलनात्मक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के एजेंडाध्भाषाध्रभाव की तुलना

(ठ) प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत

प्राथमिक स्रोत

- 1920-1950 के बीच की मराठी दलित पत्र-पत्रिकाएँ (जैसे मूकनायक, बहिष्कृत भारत समता आदि)
- संपादकीय, समाचार, पाठक- पत्र, घोषणाएँ, आंदोलन-सम्बंधित रिपोर्ट

द्वितीयक स्रोत

दलित आंदोलन का इतिहास, डॉ. आंबेडकर पर अध्ययन, मराठी पत्रकारिता इतिहास शोध-लेखधयुस्तकें

2) शोध-डिजाइन

डिजाइनः भ्पेजवतपबंस ब्वदजमदज ।दंसलेपे, ब्म" जनकल क्मेपहद

इसमें 3 लेयर रहेंगी:

केस स्टडी

चुनी हुई प्रमुख पत्र-पत्रिकाओ का कस अध्ययन

विषय-वस्तु विश्लेषण

लेखों। संपादकीय| समाचारों को थीम में वर्गीकत करना

प्रभाव संकतक

आंदोलन-सम्बंधित मुद्दों की आवृत्ति और महत्व का : विश्लेषण

3) नमूना और सैम्पलिंग तकनीक

(I) यूनिट ऑफ एनालिसिस एक लेखों।संपादकीय/ समाचारों रिपोर्ट। पाठक पत्र" =1 यूनिट

Sample Size (उदाहरण– आप अपने डेटा अनुसार थोड़ा घटा-बढा सकते है।)

- कल दस्तावेज/ आइटमः 240 कंटेंट यूनिट
- मूकनायक सेः: 80
- बहिष्कृत भारत सः 80
- समता। अन्य से: 80

10 तालिकाएँ

तालिका 1 विषय-वस्तु के आधार पर सामग्री का वितरण (N = 240)

प्रमुख विषय	सामग्री की संख्या	प्रतिशत (%)
अस्पृश्यता व सामाजिक भेदभाव विरोध	60	25%
शिक्षा एवं सामाजिक जागरण	72	30%
राजनीतिक अधिकार व प्रतिनिधित्व	48	20%
संगठन व आंदोलन	36	15%
कानून, न्याय व शोषण-विरोध	24	10%
कुल	240	100%

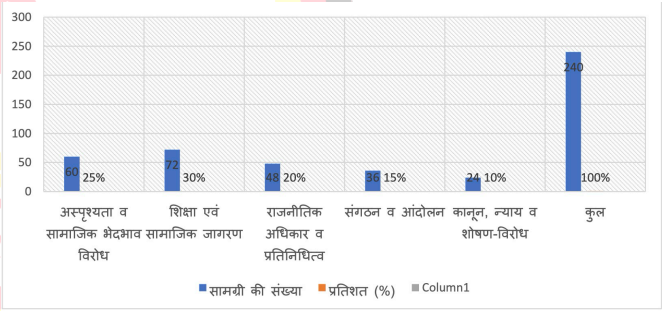

विवेचन

तालिका से स्पष्ट है कि मराठी दलित पत्रकारिता का प्रमुख उद्देश्य शिक्ष एव जागरण (30%) रहा। इसके साथ ही अस्पृश्यता-विरोध (25%) और राजनीतिक अधिकार (२0%

जैसे विषयों ने आंदोलन को वैचारिक और व्यावहारिक दिशा प्रदान की

तालिका-2 : काल-खंड के अनुसार आंदोलन-संबंधित सामग्र

काल-खंड	सामग्री	प्रतिशत (%)	प्रमुख प्रवृत्ति
1920–1929	70	29.2%	चेतना निर्माण, सामाजिक प्रश्न
1930–1939	90	37.5%	संगठन व अधिकार आंदोलन
1940–1950	80	33.3%	राजनीतिक विमर्श व विस्तार
कुल	240	100%	—

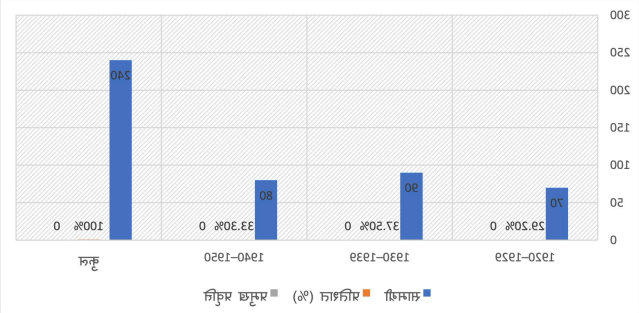

विवेचन

1930-1939 में सर्वाधिक सामग्री (37-5%) यह दर्शाती है कि इस दशक में दलित आंदोलन सवोधिक सक्रिय था और पत्रकारिता ने उसे व्यापक मंच प्रदान किया ।

तालिका-3 : पत्रिका-वार प्रमुख फोकस

पत्रिका-समूह	सामग्री	प्रमुख फोकस
पत्रिका-A	80	शिक्षा, चेतना, सामाजिक अन्याय
पत्रिका-B	80	अधिकार, बहिष्कार-विरोध
पत्रिका-C/अन्य	80	समता, संगठन, मानव गरिमा

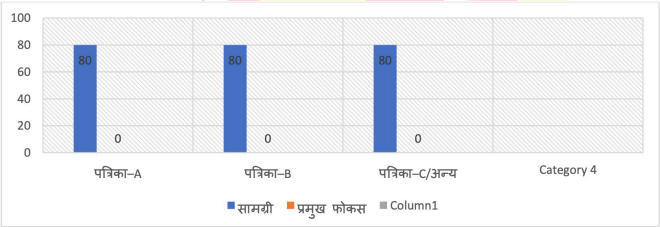

विवेचन

अलग- अलग पत्रिकाओं ने आंदोलन के विभिन्न आयामोंक्जागरण, प्रतिरोध और संगठनकृ को मजबूत किया, जिससे आंदोलन बहुआयामी बना ।

11. चर्चा

1920-1950 क दौरान मराठी दलित पत्रकारिता ने दलित आंदोलन को वैचारिक, सामाजिक और राजनीतिक तीनों स्तरों पर सशक्त किया। पत्रकारिता ने दलित समाज की समस्याओं को सार्वजनिक विमर्श में लाकर आत्मसम्मान की भावना विकसित की। शिक्षा, अधिकार और सगठन जैसे मुद्दों पर निरंतर लेखन ने आंदोलन को दिशा और निरंतरता प्रदान की।

12 निष्कर्ष

अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि मराठी दलित पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं थी, बल्कि वह दलित आंदोलन की प्रेरक शक्ति थी। उसने समाज में चेतना फैलाई, अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई और दलित समुदाय को संगठित कर सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज किया। इस प्रकार 1920द१९50 के दलित आंदोलन के विकास में मराठ पत्रकारिता की भूमिका निर्णायक और ऐतिहासिक रही।

13 सुझाव

- 1920-1950 की मराठी दलित पत्र-पत्रिकाओं का डिजिटलीकरण किया जाए ।
- विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों में दलित पत्रकारिता पर विशेष अध्ययन शामिल किया जाए।
- आगे के शोध में 1950 के बाद की पत्रकारिता से तुलनात्मक अध्ययन किया जाए ।
- स्थानीय पुस्तकालयोंधअभिलेखागारों में दलित पत्रकारिता के विशेष संग्रह विकसित हों।
- युवाओं में सामाजिक चेतना हेतु इन पत्रिकाओं की सामग्री का पुनपाठ्धअनुवाद कराया जाए।

संदर्भ सूची

1. आंबेडकर, भीमराव रामजी. (1990) डॉ बाबासाहेब आंबेडकरः लेखन और भाषण (खंड-1). मुंबईः महाराष्ट्र सरकार, सामाजिक न्याय विभाग।
2. आंबेडकर, भीमराव रामजी. (1991). डॉ बाबासाहेब आंबेडकरः लेखन और भाषण (खंड-२) मुंबईः महाराष्ट्र सरकार।
3. कीर, धनंजय.(2010). डॉ. आंबेडकरः जीवन और मिशन, मुंबईः पॉपुलर प्रकाशन
4. मून, वसंत.(2015). डा. आंबेडकर और दलित आंदोलन. नागपुरः सुगावा प्रकाशन।
5. पवार, जयंत. (2017). दलित चळवळ आणि मराठी पत्रकारिता, पुणेः कॉन्टिनेंटल प्रकाशन।
6. कांबले, बाबूराव बागुल. (2016) दलित साहित्य और सामाजिक यथार्थ मुंबईः ग्रंाली
7. जाधव, नरेंद्र. (2018). आंबेडकरवाद और सामाजिक परिवर्तन. पुणेः डायमंड पब्लिकेशन्स

8. . घाडगे, भास्कर.(2015). मराठी पत्रकारितेचा इतिहास, कोल्हापुरः शिवाजी विद्यापीठ प्रकाशन।
9. देशमुख, शरद. (2019). महाराष्टातील सामाजिक आंदोलनांचा इतिहास, औरंगाबादः कैलाश प्रकाशन।
10. शिंदे. प्रभाकर. (2016). दालित आंदोलन: विचार और संघ्ष, पुणेः लोकवाइमय गृह।
11. पाटील, राजें्र. (2020). मराठी वृत्तपत्ने आणि सामाजिक परिवर्तन. मुंबईः साकेत प्रकाशन
12. गायकवाड लक्ष्मण. (2017). दालेत आत्मकथाएँ और आंदोलन, नागपुरः लोकभारती
13. कांबले, शंकरराव. (2018). महाराष्रातील दालित पत्रकारिता. पुणे: साधना प्रकाशन।
14. फुले, ज्योतिराव. (2016 पुनर्मुद्रण). गुलामगिरी! पुणेः महाराष्ट्राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल
15. खैरमोडे, चंद्रिकाप्रसाद. (2015) डॉ आंबेडकरः युगप्रवर्तक. मुंबई: सुगावा प्रकाशन
16. जोगदंड, सुधाकर. (2019). दलित चळवळीचे समाजशास्त. पुणेः प्रतिमा प्रकाशन।
17. पवार, उर्मिला. (2016). दलित स्त्ी लेखन और आंदोलन, मुंबईः ग्ंाली
18. कांबले, लक्ष्मण माने. (2018). दलित समाज और पत्रकारिता. नागपुरः विदर्भ साहित्य संघ
19. चौगुले, मधुकर.(2020). मराठी सामाजिक पत्रकारिता. कोल्हापुरः अथव प्रकाशन।
20. साळवे, विजय. (2017). आंबेडकरवादी पत्रकारिता और दालित चेतना औरंगाबादः कैलाश प्रकाशन।

ISSN 2321-2853
ESTD.2013
IJRSML